अज़ : शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मोहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

रिसाला नम्बर : 47

(तख़रीज शुदह)

T.V. की तबाह कारियां

खौफ़नाक कन-खजूरे

खूंख़ार छिप-कलियां

बच्चों को T.V. दिलाने पर अज़ाब

T.V. घर से निकालने पर सरकार ﷺ की तशरीफ़ आ-वरी

T.V. के ज़रीए जिस्मानी बीमारियां

मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है

T.V. की वजह से मुर्दे की चीख़ो पुकार

पेशकश : मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

मक-त-बतुल मदीना ®

सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

''T.V.की तबाह कारियां ''

येह बयान **T.V.की तबाह कारियां** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का है, जिसे मजलिसे **मक्तबतुल मदीना** ने उर्दू में शाएअ़ फ़रमाया है। **मजलिसे तराजिम** (**दा'वते इस्लामी**) ने इस बयान को हिन्दी रस्मुल ख़त में **मक्त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

www.dawateislami.net

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो **मजलिसे तराजिम** को मुत्त़लअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये ।

राबित़ा:- ***मजलिसे तराजिम***
(दा'वते इस्लामी)
मक्त-बतुल मदीना®
अह़मदआबाद। **फ़ोन: 0091-79-2539 11 68**
Email : maktabahind@gmail.com

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4
ख़ौफ़नाक कनखजूरा	4
वज़्नी लाश	5
येह बातें अ़क्ल में नहीं आतीं !	5
इतराते हुए सुसराल जाने वाले का अन्जाम	6
खूंख़ार छुपकलियां	6
नेक लड़की को क्यूं अ़ज़ाब हुवा	7
नमाज़ी और रोज़ादार भी गुनाह के अ़ज़ाब में गरिफ़्तार	7
बच्चों को टी.वी. दिलाने पर अ़ज़ाब	8
बाल बच्चों की इस्लाह़ की ज़िम्मादारी	8
अ़ज़ाब से किस त़रह़ बचाएं ?	9
जहन्नम का तआ़रुफ़	9
मह़बूबे बारी की जहन्नम के ख़ौफ़ से गिर्या व ज़ारी	10
अफ़्सोस ! हमारा दिल नहीं लरज़ता !	11
मुआ़शरे की बरबादी में T.V. का घिनावना किरदार	11
मौलाना साहिब ! मुजरिम कौन ?	12
मुझे मेरे बाप ने बरबाद कर दिया !	12
T.V. घर से निकाल दीजिये	13
T.V. घर से निकालना पर सरकार صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم की तश्रीफ़ आवरी	13
T.V. किस त़रह़ मौत का सबब बना	14
T.V. के ज़रीए जिस्मानी बिमारियां	14
नॉविलें और कहानियां	15
ढोल बाजे मिटा दो !	15
घर घर म्यूज़िक सेन्टर	16
बन्दर व ख़िन्ज़ीर	16
ज़मीन में धंस जाएंगे	16
}¢¢Ï¢¢§H ÈU¢Ý }¢ }²çÁ¢ÜUH ÅKÝ	16
गाने बजाने वाले की कमाई ह़राम है	17
मा'मूली सी दौलत	17
कानों में पिघला हुवा सीसा	17
मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है	17
कानों में उ़गलियां डालना	17
मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये	18
मूसीक़ी से बचने का इन्आ़म	18
जन्नत के क़ारी	19
तौबा का त़रीक़ा	19
एक मेजर के तअस्सुरात	19
T.V. की वजह से मुर्दे की चीख़ो पुकार	19
सरकार صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم का दीदार हो गया	19

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

T.V. की तबाह कारियां[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये عَزَّوَجَلَّ *आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे।*

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान सख़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि मैं ने तुझ में दस हज़ार कान पैदा फ़रमाए, यहां तक कि तूने मेरा कलाम सुना और दस हज़ार ज़बानें पैदा फ़रमाईं जिन के ज़रीए तूने मुझ से कलाम किया। तू मुझे बहुत ज़ियादा मह़बूब और मेरे नज़्दीक तरीन उस वक़्त होगा जब तू मेरा ज़िक्र करेगा और **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत पर से दुरूद भेजेगा।"

(अल क़ौलूल बदीअ़, स-फ़ह़ा:175,176, मुअस्सिसतुर्रय्यान, बैरूत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़नाक कनखजूरे

हिन्द के किसी शहर की एक मस्जिद में कुछ सोगवार अफ़राद घबराए हुए आए और नमाज़ियों से केहने लगे : हमारे यहां मय्यित हो गई है और बड़ा अ़जीब मुआ़मला है, आप ह़ज़रात बराए करम दुआ़ फ़रमा दीजिये। जब सब घर पहुंचे तो **एक जवान औ़रत की लाश कमरे में रखी थी और उस के चारों त़रफ़ बड़े बड़े ख़ौफ़नाक कनखजूरे मुह़ासरा किये हुए थे !** येह वह़शतनाक मन्ज़र देख कर मारे ख़ौफ़ के सब की घिग्गी बंध गई, किसी समझदार शख़्स ने कहा : येह मय्यित का अ़ज़ाब मा'लूम होता है जो हमारी इ़ब्रत के लिये ज़ाहिर किया गया है ! आओ मिल कर इस्तिग़फ़ार करते हैं। चुनान्चे सब ने मिल कर तौबा व इस्तिग़फ़ार कर के गिड़गिड़ा कर और रो रो कर काफ़ी देर तक दुआ़ मांगी। बिल आख़िर ख़ौफ़नाक कनखजूरे लाश का घेराव छोड़ कर एक त़रफ़ कोने में जम्अ़ हो गए। डरते डरते मय्यित की तज्हीज़ व तक्फ़ीन की तरकीब बनी। नमाज़े जनाज़ा के बा'द जब मय्यित को क़ब्र में उतारा गया तो बहुत सारे ख़ौफ़नाक कनखजूरे क़ब्र के एक कोने में जम्अ़ थे येह देख कर लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैल गया, जूं तूं क़ब्र को बन्द कर के लोग वहां से रुख़्सत हो हुए।

तद्फ़ीन के बा'द जब मय्यित की मां से उस का अ़मल दरयाफ़्त किया गया तो उस ने कहा : येह T.V. देखने की बहुत शौक़ीन थी। एक दिन T.V. के प्रोग्राम में उस का पसन्दीदा गाना आ रहा था कि अज़ान शुरूअ़ हो गई, मैं ने कहा : बेटी ! अज़ान का एह़तिराम करो और T.V. बन्द कर दो। उस ने येह केह कर T.V. बन्द करने से इन्कार कर दिया कि "अम्मी ! अज़ान तो रोज़ाना होती है मगर येह प्रोग्राम और गाना कहां रोज़ रोज़

---

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी त़हरीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सालाना इज्तिमाअ़ (24,25,26 र-जबुल मुरज्जब सिने 1419 हिजरी, मदीनतुल औलिया अह़मदआबाद) में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम के साथ ह़ाज़िरे ख़िदमत है। पेशकश : मक-त-बतुल मदीना

आता है !" ऐसा मा'लूम होता है कि उस को येह अ़ज़ाब इसी सबब से हुवा । و اللّٰہ تعالٰی اعلم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ

वज़्नी लाश

र-मज़ानुल मुबारक की एक शाम मां ने T.V. देखने में मश्गूल अपनी बेटी से कहा : आज इफ़्तार के लिये मेहमान आने वाले हैं, आओ मेरा हाथ बटाओ । उस ने जवाब दिया : अम्मी ! आज एक ख़ुसूसी प्रोग्राम आ रहा है मैं वोह देख रही हूं । मां ने फिर हुक्म दया । मगर उस ने सुनी अन सुनी कर दी । मां की मुदाख़लत से बचने के लिये वोह ऊपर के कमरे में चली गई और अन्दर से कून्डी लगा कर T.V. देखने में मश्गूल हुई । इफ़्तार के वक़्त मां ने आवाज़ें दीं मगर जवाब न मिला, ऊपर जा कर दस्तक दी मगर जवाब नदारद ! अब वोह घबरा गई और उस ने शोर मचा कर घरवालों को इकठ्ठा कर लिया, बिल आख़िर दरवाज़ा तोड़ा गया, येह देख कर सब की चीख़ें निकल गईं कि वोह जवान लड़की T.V. के सामने ओंधे मुंह पड़ी है, जब हिला जुला कर देखा तो वोह मर चुकी थी ! कोहराम मच गया, जब लाश उठाने लगे ते न उठाई जा सकी ऐसा महसूस हुवा कि गोया टनों वज़्नी लाश है ! इत्तिफ़ाक़ से वहां से हटाने के लिये किसी ने T.V. को उठाया तो **लाश** हल्की हो गई और लोगों से उठ गई ! अब जब T.V. उठाते तो लाश उठती और रख देते ते **लाश वज़्नी** हो जाती । बहर ह़ाल जूं तूं तज्हीज़ व तक्फ़ीन के मराह़िल त़ै हुए । अब जनाज़ा उठाने लगे तो वोह किसी सूरत से न उठा, जब T.V. उठाया तब कहीं उठा ! आख़िरे कार एक साह़िब आगे आगे T.V. उठा कर चले और पीछे पीछे जनाज़ा । नमाज़े जनाज़ा के बा'द तदफ़ीन हुई तो लाश बाहर निकल पड़ी लोग घबरा गए फिर जूं तूं उतारा मगर ऐसा ही हुवा । बिल आख़िर जब T.V. क़ब्र में रखा तो लाश बाहर न निकली । लिहाज़ा T.V. को भी साथ ही दफ़्न कर दिया गया ।

www.dawateislami.net

येह बातें अ़क़्ल में नहीं आतीं !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन वाक़ेआ़त को सुन कर हो सकता है किसी के ज़ेहन में येह **वस्वसा** आए कि येह सब किस त़रह़ हो सकता है येह बातें अ़क़्ल में नहीं आतीं । अ़र्ज़ येह है हर बात को अ़क़्ल की कसोटी पर नहीं रखा जाता । सवाब व अ़ज़ाब का मुआ़मला ह़क़ है । हो सकता है "अ़क़्ल" से सोचने वाले की समझ में مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ब्र व ह़श्र व जन्नत व दोज़ख़ के मुआ़मलात भी न आएं । येह इ़ब्रतनाक मुझे मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ से मा'लूम हुए चूंकि शरीअ़त से नहीं टकराते इस लिये मैं ने आख़िरत की बेहतरी के लिये अपने अन्दाज़ में पेश करनी के सअ़य की है । वल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस में मुझे दुन्या का कोई लालच नहीं, उम्मत की इस्लाह़ मन्ज़ूर है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ के वाक़ेआ़त को सुन कर काफ़ी लोगों की इस्लाह़ हो जाने का मुशाहदा है । यक़ीनन शैत़ान कभी नहीं चाहेगा कि T.V. वग़ैरा के ज़रीए फ़िल्मों, डिरामों और गाने बाजों के गुनाह करने वाले लोग ताइब हों । इस लिये वोह इस त़रह़ के वाक़ेआ़त सुनने वालों को बहकाएगा ख़ूब उक्साएगा कि इन की वाक़िए़ की मुख़ालिफ़ करो, ख़ूब मज़ाक़ उड़ाओ ताकि तुम भी फ़िल्मों डिरामों से तौबा करने से बाज़ रहो और दूसरों को इन गुनाहों में मज़ीद पक्का कर के मेरा हाथ बटाओ । मेरे भोले भाले इस्लामी भाइयो ! अगर बिल्फ़र्ज़ येह वाक़ेआ़त मन

घड़त हों तब भी फ़िल्में डिरामे देखना कौन सा कारे सवाब है ? ज़ाहिर हर ज़ी शुऊ़र मुसल्मान इस को ना जाइज़ काम तस्लीम करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों की इब्रत के लिये कभी कभी अज़ाबात के दर्दनाक मनाज़िर दिखाता है यक़ीन मानिये मुख़्तलिफ़ गुनाहों के दर्दनाक अज़ाबात के वाक़ेआत से बुज़ुर्गों की किताबें भरी पड़ी हैं। इन में से एक अजीबो ग़रीब हिकायत पेश करता हूं, चुनान्चे ह़ज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ अश्शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं :

इतराते हुए सुसराल जाने वाले का अ़ज़ाब

एक गोरकन जिस के चेहरे का कुछ हिस्सा लोहे का था, उस का बयान है : एक बार रात के वक़्त एक जनाज़ा आया, मैं ने क़ब्र खोदी, मय्यित को दफ़्न कर के जब लोग चले गए तो मैं ने येह अ़जीब मन्ज़र देखा कि ऊंट की शक्ल के दो सफ़ेद परिन्दे उड़ते हुए आए, एक उस ताज़ा क़ब्र के सिरहाने की त़रफ़ और दूसरा पाएंती (या'नी पांव) की जानिब बैठ गया। फिर उन में से एक क़ब्र खोद कर अन्दर दाख़िल हो गया जब कि दूसरा कनारे पर मौजूद रहा। मैं क़ब्र के क़रीब आ गया ताकि माजरा देखूं। मैं ने सुना, वोह परिन्दा मय्यित से केह रहा है : **ऐ आदमी क्या तू वोही नहीं जो बेश लिबास पहन कर तकब्बुर से चलता हुवा सुसराल जाता था।** उस (मय्यित) ने घबरा कर कहा : मैं इस अ़ज़ाब को बरदाश्त नहीं कर सकूंगा। उस **परिन्दे** ने मुर्दे को तीन ज़ोर दार ज़र्बें लगाईं जिस से क़ब्र का तेल पानी सब निकल आया। फिर यकायक उस परिन्दे ने मेरी त़रफ़ सर उठाया और कहा, ''देखो वोह कहां बैठा है **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील करे।'' येह केहते ही उस ने मेरे मुंह पर शदीद चोट मारी जिस के सबब मैं रात भर बेहोश पड़ा रहा, जब सुब्ह़ होश आया तो मेरे चेहरे का बा'ज़ हिस्सा लोहे का हो चुका था।

www.dawateislami.net

(शरहुस्सुदूर, स-फ़ह़ा:172, मुलख़्ख़सन मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा हिन्द)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में उन नख़्राबाज़ दामादों के लिये इब्रत के बे शुमार म-दनी फूल हैं जो सुसराल वालों पर अपनी फ़ौक़िय्यत जताने, ख़्वाह मख़्वाह रोब जमाते, उन को डराते, बात बात पर इतराते, बल खाते, धमकाते, ज़िल्लत आमेज़ बातें सुनाते और ना जाइज़ तौ़र पर दबाते हैं। नीज़ अगर कभी दा'वत वग़ैरा हुई धाक बिठाने की ग़-रज़ से उ़म्दा लिबास पहन कर ख़ूब इतराते ठाठ ठस्से के साथ सुसराल जाते हैं।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

ख़ूंख़्वार छुपकलियां

पाकिस्तान के किसी शहर के एक घर में V.C.R. पर सारा घर फ़िल्म बीनी में मस्रूफ़ था। जब कि एक लड़की तिलावते क़ुरआन में मगन थी, छोटी बहन ने आ कर कहा : बाजी ! बहुत अच्छी फ़िल्म लगी है तुम भी आओना ! चुनान्चे वोह क़ुरआने करीम में निशानी लगा कर आई और फ़िल्म देखने में मश्ग़ूल हुई। फ़िल्म ख़त्म हुई तो फिर वोह तिलावत के लिये आई। **यकायक तक़रीबन छे ईंच लम्बी छुपकली कहीं से आ निकली और उस ने जसत लगाई और उस के माथे पर**

चिपक गई । मारे दहशत के लड़की चीख़ मार कर गिरी, घर के तमाम अफ़राद घबरा कर उस की त़रफ़ दौड़े और किसी लकड़ी के ज़रीए उस **छुपकली** को हटाने की कोशिश करने लगे कि दूसरी मुसीबत आई और वोह येह कि अत़राफ़ से बहुत सारी छुपकलियां निकलने लगीं और सब ने उस लड़की पर यकबारगी हल्ला बोल दिया ! लड़की ख़ौफ़ से चिल्लाती रही, घर के तमाम अफ़राद ह़ैरान व शश्दर खड़े देख रहे थे । आह ! उस लड़की ने सब की आंखों के सामने चीखते हुए तड़प तड़प कर जान दे दी । मर्ह़ूमा की तदफ़ीन के बा'द फ़ातेह़ा पढ़ कर लोग जूं ही पलटे कि **एक ख़ौफ़नाक धमाका हुवा, सब ने बे इख़्तियार मुड़ कर जो देखा तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र देखा । आह ! मर्ह़ूमा की क़ब्र शक हो चुकी थी, और उस लड़की की लाश के टुकड़े उछल उछल कर बाहर गिर रहे थे तमाम लोग ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग खड़े हुए ।**

नेक लड़की को क्यूं अ़ज़ाब हुवा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है यहां किसी को वस्वसा आए कि फ़िल्म सब ने मिल कर देखी इन में जो लड़की तिलावते क़ुरआन की शौक़ीन थी आख़िर उसी पर अ़ज़ाब क्यूं नाज़िल हुवा ? नीज़ करोड़ों मुसल्मान आजकल फ़िल्में डिरामे देखते हैं और उन में से रोज़ाना ही कई अफ़राद फ़ौत होते हैं उन का अ़ज़ाब क्यूं नज़र नहीं आता ? इन वस्वसों का जवाब येह है कि सवाब या अ़ज़ाब देना **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत (मरज़ी) पर है । वोह चाहे तो बड़े से बड़े गुनहगार की बिला ह़िसाबो किताब मग़्फ़िरत फ़रमा दे और अगर चाहे तो बड़े से बड़े नेकूकार को किसी छोटे से गुनाह पर पकड़ कर सज़ा में मुब्तला फ़रमा दे । चुनान्चे पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 284 में इर्शाद होता है :-

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा ।

(पारह 3, अल बक़रह 284)

नमाज़ी और रोज़ादार भी गुनाह के अ़ज़ाब में गरिफ़्तार

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जोज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा सिने 597 हिजरी) **उ़यूनुल ह़िकायात** में नक़्ल फ़रमाते हैं, एक शख़्स का केहना है : हम दो[2] अफ़राद ने एक बार क़ब्रिस्तान में नमाज़े मग़रिब अदा की, कुछ देर बा'द मुझे एक क़ब्र से रोने की आवाज़ आने लगी, मैं क़रीब गया तो कोई केह रहा था : "भाई मैं तो नमाज़ पढ़ता था और रोज़ा रखता था ।" मैं ने अपने रफ़ीक़ की तवज्जोह दिलाई तो उस ने भी क़रीब आ कर वोही आवाज़ सुनी । हम वहां से चले गए । दूसरे रोज़ मैं ने फिर वहीं नमाज़ पढ़ी, वक़्ते मुक़र्ररा पर उसी क़ब्र से फिर वोही आवाज़ सुनाई दी, मुझ पर दहशत त़ारी हुई और घर आ कर मैं दो माह तक बीमार पड़ा रहा ।

(उ़यूनुल ह़िकायात, स-फ़ह़ा:304,305 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ाहिरन नेक का अ़ज़ाब नज़र आने में येह ह़िक्मत बिल्कुल वाज़ेह़ है कि कोई अपनी नेकी को काफ़ी समझते हुए ख़ुद को अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ व मामून तसव्वुर न करे, बल्कि सभी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से हर आन लर्ज़ां व तर्सां रहना चाहिये, कोई

अपने बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़िया तदबीर** से आगाह नहीं।

रहा येह है कि फ़िल्में, डिरामे देखने वाले रोज़ ही फ़ौत होते हैं आख़िर उन सब का अ़ज़ाब क्यूं नज़र नहीं आता! इस सिल्सिले में अ़र्ज़ येह है कि किस को अ़ज़ाब हो रहा है किस को नहीं हो रहा इस का हमें इ़ल्म ही नहीं और अगर हो भी रहा है तो हमें नज़र आना कोई ज़रूरी नहीं। हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना और उस से तौबा करनी और अ़ज़ाब से पनाह मांगनी चाहिये।

फ़िल्म देखे और जो गाने सुने　　कील उस की आंख कानों में ठुके
फ़िल्म बीं की आंख में दोज़ख़ की आग　　बा'दे मुर्दन होगी तू टी.वी. से भाग

बच्चों को T.V. दिलाने पर अ़ज़ाब

अ़रब शरीफ़ में दो बा अ़मल दोस्त रहते थे एक **रियाज़** में और दूसरा **जिद्दा शरीफ़** में। रियाज़ वाले दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया। एक दिन जिद्दा शरीफ़ वाले दोस्तने रियाज़ वाले मर्हूम दोस्त को ख़्वाब में अ़ज़ाब में मुब्तला देख कर उस से अ़ज़ाब का सबब दरयाफ़्त किया तो मर्हूम केहने लगा : "मुझे फ़िल्मों और डिरामों से अगर्चे नफ़रत थी मगर अपने बच्चों के इस्रार पर मैं ने उन को T.V. ख़रीद कर ला दिया। आह! **मैं जब से फ़ौत हुवा हूं, अपने घर वालों को T.V. ला कर देने के सबब अ़ज़ाब में मुब्तला हूं,** हाए! वोह तो मज़े ले ले कर **T.V.** पर डिरामे देखते हैं और मैं क़ब्र में अ़ज़ाब भुगत रहा हूं। भाई! महरबानी कीजिये मुझ पर तरस खाइये और मेरे घरवालों को समझाइये कि वोह **T.V.** को घर से निकाल दें।"

जब सुब्ह़ हुई तो जिद्दा शरीफ़ वाले दोस्त को रात वाला ख़्वाब याद न रहा। दूसरी शब फिर उसी त़रह़ का ख़्वाब देखा जिस में उस का मर्हूम दोस्त चिल्ला रहा था : "मेरे घर से जल्दी **T.V.** निकलवा दीजिये!" चुनान्चे वोह ब ज़रीए़ हवाई जहाज़ फ़ौरन **रियाज़** पहुंच गया। तमाम घर वालों को जम्अ़ कर के उस ने अपना ख़्वाब सुनाया, सुनते ही सब रोने लगे बड़ा बेटा जज़्बात के आ़लम में उठा और **T.V.** को उचक कर ज़ोर से ज़मीन पर पटख दिया, एक धमाके के साथ **T.V.**के परख़्चे उड़ गए, उस ने घर में ए'लान किया कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के बा'द कभी भी मन्हूस **T.V.** हमारे घर में दाख़िल नहीं होगा। कि इस की वजह से हमारे प्यारे अब्बू जान क़ब्र में अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हो गए।

जिद्दा शरीफ़ वाला दोस्त जब रात सोया तो उस ने अपने **मर्हूम** दोस्त को ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में देखा। मर्हूम मुस्करा कर केह रहा था : "**जिस वक़्त मेरे बेटे ने T.V. ज़मीन पर पटख़ा,** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उसी वक़्त मुझ से अ़ज़ाब दूर हो गया।**"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

छोड़ दे टी.वी को वी.सी.आर को
कर दे राज़ी रब को और सरकार को

बाल बच्चों की इस्लाह़ की ज़िम्मादारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आपने! **T.V.** किस क़-दर तबाहकार है, आह! आज हर कसो ना कस इस तबाहकार की महब्बत का शिकार है, अफ़्सोस आजकल **T.V.**

www.dawateislami.net

और **V.C.R.** पर फ़िल्में डिरामें देखना अक्सर लोगों के नज़्दीक مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐब ही नहीं रहा । अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है जनाब हमें फ़िल्में देखने का कोई शौक़ नहीं हम ने तो फ़क़त बच्चों के लिये लिया है, अगर हम घर में **T.V.** न रखें तो बच्चे पड़ोसियों के घरों में जा कर देखते हैं । प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या येह जवाब आप को ह़श्र में छुड़ा लेगा ? हरगिज़ नहीं, याद रखिये ! आप पर अपनी भी और अपने बाल बच्चों की इस्लाह़ की भी ज़िम्मादारी है । चुनान्चे पारह 28 सूरतुत्तह़रीम की छटी आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۝

(पारह 8, अत्तह़रीम 6)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामीए सुन्नत, माह़ीए बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शौहरए आफ़ाक़ तर्जमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान में इस का तर्जमा यूं करते हैं :

"ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पत्थर हैं, इस पर सख़्त करें (या'नी त़ाक़तवर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं ।"

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब से किस त़रह़ बचाएं ?

ह़ज़रते सद्रुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस ह़िस्सए आयत, يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا के त़ह़त फ़रमाते हैं, "अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमांबरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त कर के उन्हें इल्मो अदब सिखा कर (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ)" **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई जहन्नम की आग बेह़द शदीद है वोह किसी सूरत से कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा ।

जहन्नम का तआ़रुफ़

फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज में कोताही करने वालों, मां बाप को सताने वालों, अपनी औलाद की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत न करने वालों, दाढ़ी मुंडाने वालों, एक मुठ्ठी से घटाने वालों, मिलावटवाला माल धोका से चलाने वालों, डन्डी मार कर सौदा चलाने वालों, चोरों, डाकूओं, जेब कतरों, **T.V.** और **V.C.R.** और **(INTERNET)** पर फ़िल्में डिरामें देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों अपने घर वालों को इस की सहूलत फ़राहम करने वालों, अपने घरों पर **DISH**

ANTINA लगाने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने वाले मुसल्मानों के हाथ **T.V.** और **V.C.R.** बेचने वालों, इसी मक़्सद के लिये रीपैर (या'नी मरम्मत) कर के देने वालों, लोगों को फ़िल्मों की **LEAD** या **CABLE** देने वालो ! और त़रह़ त़रह़ से गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है । तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दोज़ख़ की आग हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि **सफ़ेद** हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि सियाह हो गई पस (अब) वोह निहायत ही **सियाह** है ।

(सुननुत्तरमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:266, ह़दीस:2600, दारुल फ़िक्र, बैरूत)

मह़बूबे बारी की जहन्नम के ख़ौफ़ से गिर्या व ज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान **त़बरानी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "त़बरानी अवसत़" में नक़्ल करते हैं : एक बार सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, बि इज़्ने परवर्द गार ग़ैबों पर ख़बरदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, साह़िबे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बर ह़क़ बना कर भेजा है, अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं, अगर अहले **जहन्नम का एक कपड़ा** ज़मीनो आस्मान के दरमियान लटका दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन मौत के घाट उतर जाएं । **आक़ा !** उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया अगर जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्तों में से **एक फ़िरिश्ता** दुन्या वालों के सामने ज़ाहिर हो जाए तो उस की हैबत से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं । **सरकार !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ाते वाला की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रसूले बर ह़क़ बना कर भेजा है, जहन्नम की **ज़न्जीरों** का एक ह़ल्क़ा जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया है अगर उसे दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और तह़तस्सरा (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) जा पहुंचे । सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ जिब्रईल !** बस करो इतना ही तज़्किरा काफ़ी है, कहीं दिल फट कर मैं वफ़ात न पा जाऊं । **प्यारे आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सय्यिदुना जिब्रईले** अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि रो रहे हैं फ़रमाया : **ऐ जिब्रईल** عَلَیْہِ السَّلَام ! आप क्यूं **रो रहे** हैं ? बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में आप को तो एक ख़ास मक़ाम ह़ासिल है । अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं क्यूं न रोऊं, कहीं ऐसा न हो कि इल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मौजूदा ह़ाल के बजाए मेरा कोई और ह़ाल हो, कहीं **इब्लीस** की

www.dawateislami.net

त़रह़ मुझे भी इम्तिह़ान में न डाल दिया जाए। कहीं **हारूत व मारूत** की त़रह़ मुझे भी आज़्माइश में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी बताते हैं, **रसूलुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रईल** عَلَيْهِ السَّلَام भी रो रहे थे। दोनों ह़ज़रात रोते रहे आख़िरे कार आवाज़ आई : **ऐ जिब्रईल !** عَلَيْهِ السَّلَام **ऐ मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने आप दोनों को अपनी ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ कर लिया है। **सय्यिदुना जिब्रईल** عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों की त़रफ़ परवाज़ कर गए। **मदीने के ताजवर,** शाहे बह़रो बर रसूले अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। बा'ज़ अन्सार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़रीब गुज़रे जो हंस खेल रहे थे। फ़रमाया : "**तुम** हंस रहे हो और तुम्हारे पीछे जहन्नम है, अगर तुम वोह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो तुम थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते और तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की त़रफ़ निकल जाते और ख़ूब मशक़्क़तें बरदाश्त कर के इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाते। आवाज़ आई : ऐ **मुह़म्मद** ! عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मेरे बन्दों को मायूस मत कीजिये मैं ने आप को ख़ुश ख़बरी देने वाला बना कर भेजा है और तंगी करने वाला बना कर नहीं भेजा। पस **रसूलुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, राहे रास्त पर गामज़न रहो और मियाना रवी इख़्तियार करो।"

(अल मो'जमुल अवसत़, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:78, ह़दीस:2583)

अफ़्सोस ! ह़मारा दिल नहीं लरज़ता !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ह़मारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम बल्कि सय्यिदुल मा'सूमीन हो कर भी और **सय्यिदुना जिब्रईल** عَلَيْهِ السَّلَام भी मा'सूम और मा'सूम फ़िरिश्तों के आक़ा होने के बा वुजूद अ़ज़ाबे **जहन्नम** का तज़्किरा छिड़ने पर ख़ौफ़े **रब्बे बारी** عَزَّوَجَلَّ से गिर्या व ज़ारी फ़रमाएं। और एक हम हैं कि गुनाह पर गुनाह किये जाएं मगर जहन्नम का हौलनाक तज़्किरा सुन कर न दिल लर्ज़े, और न ह़मारा कलेजा कांपे, और न ही पल्कें भीगें। **अफ़्सोस !** अ़ज़ाबे जहन्नम की ख़ौफ़नाक बातें सुन कर भी न हमें पशेमानी है, न परेशानी, ख़जालत है न नदामत।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

मुआ़शरे की बरबादी में T.V. का घिनावना किरदार

प्यारे प्यारे इस्लमी भाइयो ! ऐसा लगता है कि गुनाह कर कर के हमारे दिल सख़्त हो चुके हैं, आह ! हम आ़दी मुजरिम हो गए हैं, न नफ़्स व शैत़ान हमें नेकियों की त़रफ़ आने देते हैं न ही हम कमा ह़क़्क़ुहू कोशिश करते हैं। हमें तो दुन्या के धन्दों ही से फ़ुरसत कहां ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! रोज़ो शबाना सिर्फ़ और सिर्फ़ माल कमाना ही हमारा मश्ग़ला रह गया है, न सह़ीह़ मा'नों में नमाज़ों का शौक़ न ही रोज़ों का ज़ौक़, दुन्या के कामों से जूंही फ़ुरसत मिली झट T.V. पर कोई चेनल पकड़ लिया या V.C.R. या (INTERNET) पर कोई बेहूदा फ़िल्म चला दी और अपना वक़्त व नामए आ'माल पामाल करने में मगन हो गए। फिर T.V. का तज़्किरा आ गया

हक़ीक़त येही है कि हमारे मुआ़शरे की बरबादी में T.V. V.C.R. और (INTERNET) का निहायत ही **घिनावना किरदार** है।

मौलाना साहिब ! मुजरिम कौन ?

फ़ख़्रिया फ़िल्मे डिरामे देखने वालों की ख़िदमत में इ़ब्रत के लिये एक ह़या सोज़ वाक़ेआ़ अ़र्ज़ करता हूं : मुझे मक्कए मुकर्रमा में किसी ने एक ख़ानमां बरबाद लड़की का ख़त़ पढ़ने को दिया जिस में मज़्मून कुछ इस त़रह़ था : हमारे घर में T.V. पहले ही से मौजूद था। हमारे अब्बू के हाथ में कुछ पैसे आ गए तो डिश एन्टीना भी उठा लाए। अब हम मुल्की फ़िल्मों के इ़लावा ग़ैर मुल्की फ़िल्में भी देखने लगे। मेरी स्कूल की सहेली ने मुझे एक दिन कहा : फ़ुलां चेनल लगाओगी तो सेक्स अपील (SEX APPEAL) मनाज़िर के मज़े लूटने को मिलेंगे। एक बार जब मैं घर में अकेली थी तो वोह चेनल ऑन कर दिया ''जिन्सिय्यात'' के मुख़्तलिफ़ मनाज़िर देख कर मैं जिन्सी ख़्वाहिश के सबब आपे से बाहर हो गई, बेताब हो कर फ़ौरन घर से बाहर निकली, इत्तिफ़ाक़ से एक कार क़रीब से गुज़र रही थी जिसे एक नौ जवान चला रहा था, कार में कोई और न था, मैं ने उस से लिफ़्ट मांगी, उस ने मुझे बिठा लिया.....यहां तक कि मैं ने उस के साथ ''काला मुंह'' कर लिया। मेरी बकारत (या'नी कंवारपन) ज़ाइल हो गई, मेरे माथे पर कलंक का टीका लग गया, मैं बरबाद हो गई ! मौलाना साहिब बताइये मुजरिम कौन ?'' मैं ख़ुद या मेरे अब्बू कि जिन्हों ने घर में पहले T.V. ला कर बसाया और फिर डिश एन्टीना भी लगाया।

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

www.dawateislami.net

आह ! इस त़रह़ तो T.V. और V.C.R. और INTERNET पर फ़िल्में और डिरामे देखने के सबब रोज़ाना न जाने कितनी इ़ज़्ज़तें पामाल होती होंगी। न जाने कितने ही नौ जवान लड़के और लड़कियां दुन्या में ही बरबाद हो जाते होंगे।

मुझे मेरे बाप ने बरबाद कर दिया !

एक नौ जवान ने मुझे एक दर्दनाक मक्तूब दिया, जिस का लुब्बे लुबाब कुछ यूं है : ''मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल से नया नया वाबस्ता हुवा था। एक बार रात के इब्तिदाई ह़िस्से में अपने कमरे के अन्दर मा'सिय्यत पर नदामत के बाइ़स हाथ उठाए रो रो कर अपने **गुनाहों से तौबा** कर रहा था। रोने की आवाज़ सुन कर वालिद साहिब घबरा कर मेरे कमरे में आ गए। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ौल से ना वाक़िफ़िय्यत व दूरी के बाइ़स मेरी गिर्या व ज़ारी उन की समझ में नहीं आई। उन्हों ने मेरा बाज़ू थाम कर मुझे खड़ा कर दिया और पकड़ कर अपने कमरे में बिठा कर T.V. ऑन कर के कहा : बिल्कुल ही **मौलवी** मत बन जाओ, येह भी देख लिया करो। मैं अगर्चे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से फ़िल्मों, डिरामों और गाने बाजों से ताइब हो चुका था, मगर वालिद साहिब ने मुझे T.V. देखने पर मजबूर कर दिया। उस वक़्त T.V. पर कोई डिरामा चल रहा था, बे ह़या लड़कियों की फ़ोह़श अदाओं ने मेरे जज़्बात में हैजान पैदा करना शुरूअ़ किया, आह ! थोड़ी ही देर पहले मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइ़स गिर्या

कनां था और अब .....अब.....नफ़्सानी ख़्वाहिशात ने मुझ पर ग़लबा किया। मौक़अ़ देख कर शैत़ान ने अपना दाव चला दिया और वहीं बैठे बैठ मुझ पर "ग़ुस्ल फ़र्ज़" हो गया ! इस वाक़िए़ के बा'द एक बार फिर मैं गुनाहों के दलदल में उतर गया। चूं कि **ज़ालिम मुआ़शरे** के बेजा रस्मो रवाज मेरे निकाह़ के मुक़ाबिल बहुत बड़ी दीवार बने हुए हैं, मैं शहवत की तस्कीन के लिये अपने हातों से अपनी जवानी पामाल करने लग गया हूं और गन्दी ह़-र-कतों के बाइ़स अब नौबत यहां तक पहुंची है कि मैं शादी के क़ाबिल नहीं रहा। बताइये ! **मुजरिम कौन ? मैं ख़ुद या कि मेरे वालिद साह़िब ?"**

T.V. घर से निकाल दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़क़ीक़त का ए'तिराफ़ आप को करना ही पड़ेगा कि T.V. और V.C.R. के बाइ़स मुआ़शरे में गुनाहों का सैलाब उमंड आया है ! T.V. पर डिरामे देख देख कर और गाने सुन सुन कर आज छोटे छोटे बच्चे गलियों में टांगें थिरकाते, नाच दिखाते नज़र आ रहे हैं। आह फ़िल्मों, डिरामों, मूसीक़ी और गाने बाजों की बोहतात ने कहीं का नहीं छोड़ा। अगर आख़िरत की फ़लाह़ और अपने घराने और मुआ़शरे की इस्लाह़ मत़्लूब है तो T.V. और V.C.R. को अपने घरों से निकालना पड़ेगा : T.V. को घर से निकालिये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश कर दीजिये। आइये ! आप को ऐसा ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़ सुनाता हूं कि सीने में आप का दिल बे साख़्ता झूम उठेगा। चुनान्चे

www.dawateislami.net

T.V घर से निकालने पर सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी

कई साल हुए एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िया बयान वाले त़वील मक्तूब में कुछ येह भी था कि मेरी फूफी जान जो कि हमारे साथ ही रहती हैं आप से त़रीक़त में निस्बत क़ाइम कर के अ़त्तारिय्या हो गईं। जब इन को मा'लूम हुवा कि आप T.V. के सख़्त मुख़ालिफ़ हैं क्यूं कि लोग इस को फ़िल्मों और डिरामों के लिये इस्ते'माल करते हैं। लिहाज़ा इन के दिल में भी जज़्बा पैदा हुवा कि "हमारे पीर की ना पसन्द हमारी भी ना पसन्द" पहले तो ज़ेहन में येह आया कि इस को बेच दिया जाए फिर ख़याल आया कि अगर किसी मुसल्मान को बेचेंगे तो वोह इस के ज़रीए़ गुनाहों में पड़ सकता है, लिहाज़ा उन्हों ने T.V के सब तार काट डाले और स्टोर रूम में डलवा दिया। वोह जुमुआ़ का दिन था, मैं दो पहर को मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ ना'तों के किताबचे "मदीने की धूल" से ना'तों का मुत़ालआ़ कर रही थी। (मदीने की धूल की तमाम ना'तें ना'तिया दीवान "मुग़ीलाने मदीना" में शामिल कर दी गई हैं। मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कर सकते हैं) दौराने मुत़ालआ़ मेरी आंख लग गई, सर की आंखें तो क्या बन्द हुई दिल की आंखें खुल गईं ! اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे ग़ैब की ख़बरें देने वाले मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया, मेरे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश नज़र आ रहे थे, यकायक मुबारक होंटों को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और

जो कुछ अल्फ़ाज़ तरतीब पाए इन में येह भी था कि "आज मैं बेहद ख़ुश हूं कि टी.वी. को निकाल दिया गया है इसी लिये तुम्हारे घर आया हूं।"

मेरे घर में भी तुम आओ मेरे घर रौशनी होगी
मेरी क़िस्मत जगा जाओ इनायत येह बड़ी होगी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने T.V. से हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर नाराज़ और निकालने पर किस क़दर ख़ुश होते हैं। अक़्लमन्दां रा इशारा काफ़ी अस्त (या'नी अक़्लमन्दों के लिये इशारा काफ़ी होता है)

T.V. किस तरह मौत का सबब बना

20 फ़रवरी सिने 1999 इस्वी के एक अख़्बार में कुछ इस तरह की ख़बर शाएअ़ हुई थी : "लाहौर में रात आंधी और बारिश के बा'द शदीद बिजली चमकी जो एक मकान की छत पर लगे हुए एन्टीना पर गिरी और इस के तार से होती हुई T.V. के अन्दर दाख़िल हो गई। जिस से T.V. की स्क्रीन एक धमाके के साथ फटी अब बिजली उस से निकल कर क़रीब ही सोई हुई ख़ातून पर हम्ला आवर हुई, उस ने चीख़ो पुकार मचा दी उस का शौहर बचाने के लिये दौड़ा मगर वोह भी बिजली की लपेट में आ गया फिर वोह बिजली दीवार से टकरा कर रौशन दान से बाहर निकल गई। और वोह जल कर इन्तिक़ाल कर गया उस की बीवी को ज़ख़्मी हालत में हस्पताल में दाख़िल कर दिया गया।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और वोह दोनों मुसल्मान हों तो उन की भी मग़्फ़िरत फ़रमाए और ज़ख़्मी को रू ब सिह़्हत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم इस्लामी भाइयो ! कैसी इ़ब्रतनाक मौत है !

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तूने — जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

T.V. के ज़रीए जिस्मानी बीमारियां

एक तह़क़ीक़ के मुताबिक़ T.V. के ज़रीए "फ़्री रेडीकल्ज़" जनम लेते हैं जो कि केन्सर, दिल के अम्राज़, जोड़ों की सूजन, दिमाग़ी ख़लल के मसाइल पैदा कर सकते हैं, दिमाग़ के ख़लियों को इस तरह मुतअस्सिर करते हैं कि बुढ़ापा जल्द आ जाता है। सूरए लुक़्मान की छटी आयते करीमा में इर्शादे इलाही عَزَّوَجَلَّ है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और कुछ लोग खेल की बातें ख़रीदतें हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह से बहका दें बे समझे और उसे हंसी बना लें इन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

(पारह:21, लुक़्मान:6)

www.dawateislami.net

नोविलें और कहानियां

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह्त है : लह्व हर उस बातिल को केहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से गफ़्लत में डाले। कहानियां, अफ़्साने भी इस में दाख़िल हैं, शाने नुज़ूल : येह आयत नज़्र बिन हारिस बिन कल्दा के हक़ में नाज़िल हुई जो तिजारत के सिल्सिले में दूसरे मुल्कों का सफ़र किया करता था। उस ने अ़जमियों की किताबें ख़रीदी जिन में क़िस्से कहानियां थीं, वोह कुरैश को सुनाता और केहता : सरवरे काइनात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें आ़द व समूद के वाक़िआ़त सुनाते हैं और मैं रुस्तम व इस्फ़न्दियार और शाहाने फ़ारस की कहानियां सुनाता हूं। कुछ लोग इन कहानियों में मश्गूल हो गए और कुरआने पाक सुनने से रह गए। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

इस से जासूसी व रूमानी नोंवीलें और इश्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्साने और भूत व परी की कहानियां और लाया'नी लतीफ़े पढ़ने और सुनने वाले इब्रत हासिल करें। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحمۃُ اللہ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बा'ज़ जलीलु क़द्र सहाबा व ताबेइन म-सलन अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, सय्यिदुना सईद बिन जुबैर, सय्यिदुना हसन बसरी और सय्यिदुना इकरमा व मुजाहिद व मक्हूल वग़ैरहुम अइम्मए सहाबा व ताबेईन رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُم ने "لَهْوَ الْحَدِيْثِ" की तश्रीह **मूसीक़ी** और गाने बाजे से की है क्यूं कि यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल करने का येह एक क़वी सबब है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स-फ़हा:293 माख़ूज़न)

www.dawateislami.net

ढोल बाजे मिटा दो !

म्यूज़िक सेन्टर चलाने वालों, गाने बाजे सुनने सुनाने वालों, अपने होटलों और पान की दुकानों में गाने बाजे बजाने वालों, अपनी कारों और बसों में गाने की केसीटें चलाने वालों, नीज़ फ़नकारों ! अदाकारों और गुलूकारों सब के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है, "**मुस्नदे इमाम अह्मद बिन हम्बल** رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ में है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तमाम जहानों के लिये रह्मत और हिदायत बना कर भेजा है और मुझे मुंह और हाथ से बजाए जाने वाले **आलाते मुसीक़ी** और साज़ों को मिटाने का हुक्म दिया है और उन बुतों को मिटाने का हुक्म फ़रमाया है जिन की ज़मानए जाहिलिय्यत में पूजा होती थी। और मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम याद कर के फ़रमाया : मेरे बन्दों में से जिस ने **शराब** का एक घूंट पिया उस को इस के बदले **जहन्नम का खौलता हुवा पानी** पिलाऊंगा ख़्वाह उसे अ़ज़ाब हो या बख़्शा जाए और जो शख़्स किसी बच्चे को शराब पिलाएगा उस (पिलाने वाले) को भी खौलता हुवा पानी पिलाऊंगा ख़्वाह उसे अ़ज़ाब हो या बख़्शा जाए और गाने वाली औ़रतों की ख़रीदो फ़रोख़्त आरै गाने की ता'लीम व तिजारत और उन की क़ीमत **हराम** है।"

(मुस्नदे इमाम अह्मद बिन हम्बल, हदीस:22281, जिल्द:8, स-फ़हा:286, दारुल फ़िक्र बैरूत)

घर घर म्यूज़िक सेन्टर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये !!! जिस मीठे **मस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत का हम दम भरते हैं, उन को उन के प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आलाते मूसीक़ी या'नी ढोल, तबले, सारंगियों और बांसरियों वग़ैरा को मिटाने का हुक्म फ़रमाया है जब कि आज कई बद नसीब मुसल्मान इन मन्हूस आलात को हिर्ज़े जान बनाए हुए हैं। आह ! प्यारे आक़ा सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم म्यूज़िक के आलात को मिटाना चाहते हैं मगर मीठे आक़ा मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम लेवाओं ने गली गली **म्यूज़िक सेन्टर** खोल रखे हैं ! नहीं नहीं बल्कि आज तो मुसल्मान के अक्सर घर म्यूज़िक सेन्टर बने हुए हैं। नीज़ बयान कर्दा हदीसे मुबारक में शराबियों के लिये भी दर्से इब्रत है, **शराब** पीने वाले को **जहन्नम का खौलता हुवा पानी** पिलाया जाएगा।

बन्दर व ख़िन्ज़ीर

उ़म्दतुल क़ारी में है, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार ग़ैबों पर ख़बरदार, शहन्शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, साहिबे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : आख़िर ज़माने में मेरी उम्मत की एक क़ौम को मस्ख़ कर के **बन्दर** और **ख़िन्ज़ीर** बना दिया जाएगा। **सहाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाह वोह इस बात की गवाही देते हों कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। फ़रमाया : हां ख़्वाह नमाज़ें पढ़ते हों, रोज़े रखते हों, हज करते हों, अ़र्ज़ की गई : उन का जुर्म क्या होगा ? फ़रमाया : वोह औ़रतों का गाना सुनेंगे और बाजे बजाएंगे और शराब पियेंगे इसी लह्वो लइब में वोह रात गुज़ारेंगे और सुब्ह को **बन्दर** और **ख़िन्ज़ीर** बना दिये जाएंगे।

(उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द:14, स-फ़हा:593, दारुल फ़िक्र बैरूत)

ज़मीन में धंस जाएंगे

जामेए तिरमिज़ी में सुल्तानें दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निसान है : "मेरी उम्मत में ज़मीन में धंसा देने पत्थर बरसने और सूरतें मस्ख़ होने के वाक़ेआ़त होंगे। मुसल्मानों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : येह कब होगा ? फ़रमाया : जब गानेवाली औ़रतें और गाने का सामान ज़ाहिर होगा और शराब पी जाएगी।"

(सुननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़हा:90, हदीस:2219, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मोबाइल फ़ोन में म्यूज़िकल ट्यून

आह ! आज तो बात बात पर मूसीक़ी राइज है हर चीज़ में मूसीक़ी की धुनें सुनी जा रही हैं। हत्ता कि मज़हबी नज़र आने वाले अक्सर अफ़राद के मोबाइल फ़ोन में भी مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ म्यूज़ीकल ट्यून होती है। **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** क्या अब भी T.V. और V.C.R. पर फ़िल्में

www.dawateislami.net

डिरामे और नाच गाने देखने सुनने से सच्ची तौबा नहीं करेंगे ?

गाने बजाने वाले की कमाई ह़राम है

''कन्ज़ुल उ़म्माल'' में है, ''सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : ''मुझे आलाते मुसीक़ी को तोड़ने के लिये भेजा गया है।'' मज़ीद फ़रमाया : ''गाने वाले मर्द और गाने वाली मर्द और गाने वाली औ़रत की कमाई **ह़राम** है और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने ऊपर लाज़िम फ़रमाया है कि माले **ह़राम** से पलने वाले बदन को जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाएगा।''

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स-फ़ह़ा:99, ह़दीस:40682, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मा'मूली सी दौलत

आह ! सद हज़ार आह ! चन्द सिक्कों और आ़रिज़ी शोहरत की ह़िर्स में गुलूकार व मूसीक़ार, रक़्क़ास व रक़्क़ासा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किस क़दर नाराज़गी मोल ले रहे और क़हरे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ को दा'वत दे कर अपने लिये जहन्नम की ख़ौफ़नाक आग, **भयानक सांप** और **ख़त़रनाक बिच्छूओं** का बन्दोबस्त कर रहे हैं !

कानों में पिघला हुवा सीसा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है, ''जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठ कर गाना सुनता है क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के कानों में **पिघला हुवा सीसा** उंडेलेगा।''

www.dawateislami.net

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स-फ़ह़ा:96, ह़दीस:40662, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! होटलों, पान की दूकानों, बसों और कारों में गाने की केसीटें बजने का सिल्सिला ख़त्म हो जाए और हर त़रफ़ तिलावते क़ुरआने पाक, दुरूदो सलाम और आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'ते पाक और सुन्नतों भरे बयानात की केसीटें चलाने का सिल्सिला आ़म हो जाए।

मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, ''(लचके तोड़े के साथ) नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, सितार के तार बजाना, बरबत़, सारंगी, रबाब, बांसरी, क़ानून, झांझन, बिगल बजाना, मकरूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम है) क्यूंकि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र हैं, नीज़ बांसरी और दीगर साज़ों का सुनना भी **ह़राम** है अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है और उस पर **वाजिब** है कि न सुनने की पूरी कोशिश करे।''

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:9, स-फ़ह़ा:651, दारुल मा'रेफ़ा, बैरूत)

कानों में उंगलियां डालना

मीठे मीठे इस्लमी भाइयो ! ख़ुश नसीब हैं वोह मुसल्मान जो कलामे रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ना'ते शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सुन्नतों भरे बयानात तो सुनते हैं मगर फ़िल्मी

गानों और मूसीक़ी की आवाज़ आने पर न सुनने की पूरी कोशिश करते हुए सवाब की निय्यत से कानों में उंगलियां दाख़िल कर के वहां से फ़ौरन दूर हट जाते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं (बचपन में) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के साथ कहीं जा रहा था कि रास्ते में मिज़्मार (या'नी बांसरी) बजाने की आवाज़ आने लगी, इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने **अपने कानों में उ़गलियां डाल दीं** और रास्ते से दूसरी त़रफ़ हट गए और दूर जाने के बा'द पूछा, नाफ़ेअ़ ! आवाज़ आ रही है ? मैं ने अ़र्ज़ की : अब नहीं आ रही। तो कानों से उंगलियां निकालीं और इर्शाद फ़रमाया : "एक बार मैं सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया जो मैं ने किया।"

(सुनने अबू दावूद, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:367, ह़दीस:4924, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये

मा'लूम हुवा कि जूं ही मूसीक़ी की आवाज़ आए फ़ौरन कानों में उंगलियां दाख़िल कर के वहां से दूर हट जाए क्यूं कि अगर उंगलियां तो कानों में डाल दें मगर वहीं खड़े या बैठे रहे या मा'मूली सा परे हट गए तो मूसीक़ी की आवाज़ से बच नहीं सकेंगे। उंगलियां कानों में डाल कर न सही मगर किसी त़रह़ भी मूसीक़ी की आवाज़ से बचने की भरपूर कोशिश करना **वाजिब** है।

आह ! आह ! आह ! अब तो बसों, गाड़ियों, त़य्यारों, घरों, दुकानों, गलियों बाज़ारों में जिस त़रफ़ भी जाइये मूसीक़ी की धुनें और मोबाइल फ़ोनों में भी مَعَاذَاللّٰہ म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ सुनाई देती हैं और जो म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीवाना गुनाह से बचने की निय्यत से कानों में उंगलियां डाल कर दूर हट जाए उस का मज़ाक़ उड़े।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये
हर एक हाथ में पत्थर दिखाई देता है

मूसीक़ी से बचने का इन्आ़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो मूसीक़ी सुनने से अपने आप को बचाता है उस ख़ुश नसीब का इन्आ़म भी समाअ़त फ़रमाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश्बूदार है, क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, कहां हैं वोह लोग जो अपने कानों और आंखों को शैत़ानी मज़ामीर से दूर रखते थे ? उन्हें, सारी जमाअ़तों से अलग कर दो ! फ़िरिश्ते उन्हें अलग कर के मुश्क व अ़म्बर के टीलों पर बिठा देंगे फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा, इन को मेरी तस्बीह़ व तह़मीद सुनाओ फिर फ़िरिश्ते ऐसी आवाज़ से (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र) सुनाएंगे कि ऐसी आवाज़ सुनने वालों ने कभी न सुनी होगी।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स-फ़ह़ा:96, रक़म:40658, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

जन्नत के क़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस शख़्स ने (क़स्दन) गाने को सुना, इस को जन्नत में रूह़ानीन की आवाज़ सुनने की इजाज़त नहीं होगी । पूछा गया कि रूह़ानीन कौन हैं ? फ़रमाया : "वोह जन्नत के क़ारी हैं ।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स-फ़ह़ा:95, ह़दीस:40653, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

तौबा का त़रीक़ा

हर उस इस्लामी भाई और इस्लामी बहन से **म-दनी इल्तिजा** है जिस ने ज़िन्दगी में कभी भी फ़िल्में डिरामे देखे, गाने बाजे सुने या सुनाए हैं, वोह दो रक्अ़त नमाज़े तौबा अदा कर के अपने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की जनाब में गिड़गिड़ा कर इन गुनाहों बल्कि तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़ह्द करें कि आइन्दा कभी फ़िल्मों, डिरामों और गानों बाजों और दीगर गुनाहों के क़रीब भी नहीं फटकेंगे । जो घर के ज़िम्मादार हैं उन्हें चाहिये कि T.V. और V.C.R. को अपने घर से निकाल दें ।

एक मेजर के तअ़स्सुरात

आर्मी के एक मेजर का कुछ इस त़रह़ बयान है : "दा'वते इस्लामी" के किसी मुबल्लिग़ ने मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा **सुन्नतों भरे बयानात** की बा'ज़ केसीटें मुझे दीं उन को सुन कर मेरे दिल में हलचल मच गई । ख़ुसूसन एक केसट में बयान कर्दा इस वाक़िए़ ने मुझ पर गहरा असर डाला :

www.dawateislami.net

T.V. की वजह से मुर्दे की चीख़ो पुकार

वोह वाक़िआ़ येह है : **सिन्ध** के एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : एक रात मैं क़ब्रिस्तान में जा कर एक क़ब्र के पास बैठ गया कि मुझे ऊंघ आ गई, मैं ने ख़्वाब में देखा कि जिस क़ब्र के पास में बैठा था उस में अ़ज़ाब हो रहा है और मुर्दा चिल्ला चिल्ला कर मुझ से केह रहा है : **बचाओ बचाओ !** मैं ने कहा : मैं तुम्हें किस त़रह़ अ़ज़ाब से बचाऊं ? केहने लगा : साथ वाली बस्ती में मेरा फ़ुलां नम्बर का मकान है, मेरा एक ही बेटा है और उस ने इस वक़्त T.V. चलाया हुवा है, आह ! जब भी वोह T.V. पर कोई फ़िल्म या डिरामा देखता है मुझ पर अ़ज़ाब शुरूअ़ हो जाता है । हाए ! मैं ने उस की सह़ीह़ इस्लामी तरबिय्यत क्यूं नहीं की ? हाए ! मैं ने इस को T.V. क्यूं ला कर दिया !" मेरी आंख खुल गई । मैं सुब्ह़ उस बस्ती में पहुंचा और उस के बेटे को तलाश कर के रात वाला क़िस्सा सुनाया, इस पर वोह रोने लगा और उसी वक़्त उस ने तौबा की और अपने घर से T.V. निकाल दिया ।

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया

मेजर साह़िब ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा : केसट से येह वाक़िआ़ सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठा कि आज तो ज़िन्दगी के ठाठ हैं, अ़नक़रीब मर कर क़ब्र में उतरना पड़ेगा, अगर मैं ने बा वुजूदे क़ुदर घर में T.V. रहने दिया तो कहीं अ़ज़ाब में फंस न जाऊं ।

लिहाज़ा मैं ने अपने घर के अफ़राद को जम्अ़ कर के समझाया और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इत्तिफ़ाक़े राय से हम ने अपने घर से T.V. निकाल दिया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम इस के तक़रीबन एक हफ़्ते के बा'द मेरे बच्चों की अम्मी को **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई और सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुबारक हो, तुम्हारा घर से T.V निकालने का अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया है।"

वोह तशरीफ़ लाए येह उन का करम था
येह घर था कहां उन के आने के क़ाबिल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net